द्वितीय अध्याय

कमल कुमार और उनका साहित्य : संक्षिप्त परिचय

कमल कुमार हिन्दी कथा - साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। कमल कुमार केवल एक उपन्यासकार ही नहीं है बल्कि वे एक कहानीकार एवं आलोचक भी हैं। वे बचपन से ही कविताएँ एवं कहानियाँ लिखा करती थीं। इनकी पहली कहानी 'तीन देवियाँ' शीर्षक से प्रकाशित हुयी । इस कहानी के प्रकाशन के बाद इनके लेखन का सिलसिला बढ़ता ही रहा । वे अपने लेखन का आधार संस्कार एवं संवेदना को मानती हैं। लेखिका का मानना है कि "संस्कार उसे अपनी जमीन और जड़ों से बांधते हैं एवं संवेदना पुल बन जाती है। दूसरों के दुख-दर्द की पीड़ा, आनंद का शून्य और स्फुरण, सभी आर-पार होकर कलात्मक अनुभव के किसी क्षण में सृजन का अंश बन जाते हैं। सृजन के संवेदनशील हृदय में दूसरों की वेदना, व्यथा, आशा-निराशा समाहित होती जाती है। स्व से पर की प्रक्रिया में सृजन होता जाता है।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कमल कुमार का नाम जाना पहचाना एवं प्रसिद्ध है। 21वीं सदी की महिला लेखिकाओं में वे अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। लेखिका का लेखन किसी सीमा में आबद्ध होकर नहीं रहता है बल्कि एक व्यापक रूप में दिखाई पड़ता है। उनके बारे में दिनेश द्विवेदी ने लिखा है कि- "कमल कुमार एक सशक्त कथा लेखिका हैं। इस रूप में इन्होंने अपनी पहचान बनाई है। जहाँ इनका कथा पक्ष सशक्त है वहीं वह अपने दायरे से बाहर भी निकलती हैं, नारी सुलभ सीमा इनका लेखन नहीं है। वह संकीर्ण सीमाओं से परे व्यापक यथार्थ और संघर्ष को आत्मसात करते हुये अभिव्यक्त करती हैं।"[1]

हिन्दी जगत में उनके द्वारा रचित सम्पूर्ण काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, उपन्यास एवं आलोचना उनके सशक्त लेखन का परिचय देते हैं। लेखिका किसी भी विषय पर बगैर किसी पूर्वाग्रह के स्वतंत्र रूप से अपने विचार रखती हैं। कमल कुमार की रचना प्रक्रिया उनकी बेबाकी एवं निर्भीकता के कारण कई बार कई प्रकाशकों द्वारा ठुकरा दिया गया परन्तु कमल कुमार बिना किसी भय के समाज के संवेदनशील मुद्दों पर लिखती रही हैं और विभिन्न प्रकाशकों के पास रचनायें छापने हेतु भेजती रही हैं। उनके द्वारा रचित 'यह खबर नहीं' उपन्यास बहुत बार प्रकाशकों द्वारा ठुकराया गया और अंततः अखिल भारती प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास में कमल कुमार ने सच्ची घटना को आधार बनाकर राजनीति की घटिया चालों पर शिकंजा कसने का प्रयास किया और अपनी कृति के माध्यम से हिन्दी जगत में प्रसिद्धि का कारण बनीं । इसलिये वर्तमान में कमल कुमार एक महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में सामने आती हैं। उनके लेखन में समसामयिक विषयों के साथ ही आम आदमी के प्रति एक दायित्व व सरोकार भी है। कमल कुमार साहित्यकारों में स्वयं को श्रेष्ठता से दूर रखकर अपने भीतरी लेखकीय व्यक्तित्व को सुरक्षित रखा और साहित्य रचना में निरंतर अग्रसर होती रहीं हैं। उनका प्रथम उपन्यास 'अपार्थ' उपन्यास आत्महत्या के विरूद्ध और जीने की नयी दृष्टि विस्तार देता है। कमल कुमार द्वारा मानवीय रिश्तों के बदलते स्वरूप, मध्यवर्गीय परिवारों के जीवन, संयुक्त परिवरों के विघटित स्वरूप, पितृसत्ता के सामंतशाही शासन, घरेलू हिंसा की शिकार औरतें, अस्तित्व की तलाश में नारी, महानगरीय जीवन के दुष्प्रभाव, मजदूर वर्ग की पीड़ा, धर्म का कट्टरवादी नजरिया, ब्रेन- ड्रेन का शिकार भारतीय युवा वर्ग, भौतिकवादी प्रवृत्ति का प्रभाव राजनैतिक दलों की घटिया चालों, भ्रष्ट तंत्र के विकृत स्वरूप नैतिकता के पतन और मूल्यों के ह्रास को लेखिका ने अपने लेखन में स्थान दिया है ।

किसी भी लेखन में कोई न कोई पात्र लेखक का प्रतिनिधि होता है। वह उसका बहुत करीबी होता है। उस पात्र के माध्यम से हम लेखक की मानसिकता का परिचय पाते हैं। कमल कुमार के कथा साहित्य में आए पात्र उनकी मानसिकता के परिचायक हैं। कमल कुमार नारी चेतना की प्रबल पक्षधर हैं। नारी का चेतन होना समय की मांग है, क्योंकि अगर वह चेतन नहीं होगी तो वह जिन्दगी में कहीं भी कामयाब नहीं हो सकती है।

2.1. जन्म तथा माता-पिता

कमल कुमार का जन्म 7 अक्टूबर 1944 को अम्बाला (अविभाजित पंजाब, अब हरियाणा) में हुआ। इनके पिता का नाम कृष्णदास और माता का नाम सत्यवती है। इनके पिता स्टेट बैंक में जनरल मैनेजर थे। इनके पिता भी लेखन प्रक्रिया में लीन रहते थे। योग शास्त्र, ज्योतिष, हस्तरेखा विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म पर अंग्रेजी में उनकी दस पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी माता सत्यावती साधारण सी पढ़ी-लिखी, घरेलू एवं सीधी-साधी गाँव की स्त्री थीं। कमल कुमार के दो बड़े भाई एवं तीन बहनें हैं।

2.2. पारिवारिक जीवन

प्रसिद्ध लेखिका कमल कुमार का सतीन्द्र कुमार अग्रवाल से विवाह हुआ। इनके पति पेशे से पत्रकार हैं। उनके पति की छः पुस्तकें पत्रकारिता पर प्रकाशित हो चुकी हैं। इनको बचपन से ही अपने नाम 'कमल कुमारी दास' से चिढ़ होती थी। जिस कारण उन्होंने शादी के बाद अपना नाम बदल लिया। कमल कुमार ने अपनी पुस्तक 'जो कहूँगी सच कहूँगी' में लिखा है "शादी के बाद पति का नाम सतीन्द्र कुमार अग्रवाल था। मैंने कुमार लगाया अग्रवाल नहीं। एम0फिल0 के बाद अपना नाम भी कमल कर लिया तो हो गई कमल कुमार।"[2] कमल कुमार का एक बेटा और एक बेटी है। बेटा आदित्य सिंगापुर में बहुराष्ट्रीय कंपनी में चार्टड एकाउंटेंट है। बेटी

अस्मिता अग्रवाल पत्रकार, पहले हिन्दुस्तान टाइम्स के साथ विशेष संवाददाता और अब एंशियन ऐज के साथ सहायक सम्पादक हैं।

इनके व्यक्तित्व के बारे में बात करें तो वे अपने बहुमुखी व बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अलग से अपनी पहचान बनाती हैं। उनके व्यक्तित्व में बहुरंगी किरणों की छटा बिखरी हुई मिलती है। सादगी सम्पन्न व्यक्तित्व व सहृदयता उनकी पहचान है । लेखिका का आत्मीय भाव अपरिचित जनों में भी खुशबू की महक बिखेरती है। जिन्दगी को देखने का इनका अपना एक अलग दृष्टिकोण है। लेखिका हाशिये पर रखी गई औरतों के अधिकारों के लिये आवाज उठाती हैं। लेखिका का व्यक्तित्व हर उस व्यक्ति पर अपनी अमिट छाप छोड़ देता है जो उसके सम्पर्क में आ जाता है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इनकी एक अलग ही पहचान देखने को मिलती है जो तमाम सामाजिक पहलूओं को अपनी रचनाओं में रचती है। ये सामाजिक मूल्यों को भी दर्शाती है। इससे इनका व्यक्तित्व अलग ही दिखाई पड़ता है।

2.3. शिक्षा

इनकी स्कूली शिक्षा-दीक्षा पिता जी के तबादले वाली नौकरी के कारण उत्तर प्रदेश, हरियाणा एवं पंजाब के विभिन्न शहरो में हुई है। इन्होंने अर्थशास्त्र में बी0ए0 ऑनर्स की डिग्री प्राप्त की और आगे की पढ़ाई साहित्य में करने का निश्चय किया। अपने इस फैसले के लिए इन्हें पिता के विरोध का सामना करना पड़ा। आप एम0ए0 हिन्दी में पंजाब विश्वविद्यालय से प्रथम स्थान के साथ स्वर्ण पदक भी प्राप्त की। दिल्ली विश्वविद्यालय से एम०फिल० एवं पीएच०डी० की उपाधि भी प्राप्त किया। एम०फिल० के लघु शोध प्रबन्ध का विषय 'साठ के बाद की कविता' पर और पीएच0डी0 'अज्ञेय की कविता' पर केन्द्रित रहा।

2.4. साहित्य सृजन की प्रेरणा

साहित्य सृजन की प्रेरणा में कमल कुमार को प्रेरणा देने वाले इनके पिता कृष्ण दास हैं। साक्षात्कार में कमल कुमार बताती हैं कि "अप्रत्यक्ष रूप से अगर पारिवारिक दृष्टि से जाऊँ तो मेरे पिता ने जीवन में मुझे बहुत प्रेरणा दी है। उन्होंने मुझे बहुत साहस की और साकारात्मक सोच की एवं कभी न हारने की और जीवन में परिश्रम करने की प्रेरणा दी। ये अपने ई-मेल द्वारा जानकारी देती हैं कि साहित्य सृजन के लिये इन्होंने बचपन से ही कुशवाहा कान्त, गुलशन नंदा इत्यादि साहित्यकारों को पढ़कर अज्ञेय जैसे साहित्यकार को पढ़ने के पीछे अपने बचपन में चन्द्रकान्ता जैसी किताबों का अध्ययन करने की रूचि को इसका कारण बताती हैं । इनका कहना है कि उसी छुटपन में 12-13 साल की लड़की जो सीढ़ियों पर बैठी पढ़ रही है वो चन्द्रकान्ता पढ़ रही है, वो एक प्रेरक तत्त्व रहा । वो अलग बात है कि फिर मैंने सबको पढ़ा | अज्ञेय को पढ़ा जितने भी साहित्यकार थे उन सबको पढ़ा। लेकिन आज भी मैं यह बात कहती हूँ कि जो नींव रखी गई उन्हीं लोगों से मेरे अन्दर रखी गई है ।

कमल कुमार की यात्रायें एवं अभिरूचियाँ लगभग सारा भारत तथा हॉलैण्ड, फ्रांस, थाईलैण्ड, बैंकाक, सिंगापुर, मलेशिया एवं आस्ट्रेलिया की यात्रायें कर चुकी हैं। इनकी रूचि तैलचित्र बनाने एवं बोसाई उगाने में रही है ।

इनका कार्य क्षेत्र दिल्ली विश्वविद्यालय के जीसस एंड मेरी कॉलेज में एसोसिएट प्रोफेसर और दिल्ली विश्वविद्यालय में दक्षिण परिसर में गेस्ट फैकल्टी के साथ भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में रिसर्च स्कॉलर, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय में आवासीय लेखक प्रोफेसर रहीं। दिल्ली विश्वविद्यालय और अन्य विश्वविद्यालयों की गेस्ट

फैकल्टी के साथ साहित्य मीडिया और स्त्री–विमर्श की प्राध्यापक रहीं तथा साहित्य जगत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

लेखिका कमल कुमार ने विभिन्न संस्थाओं की सदस्यता भी ग्रहण की हुयी है जो इस प्रकार है- ऑल इण्डिया एसोसिएशन ऑफ वूमन स्टडीज, युनिवर्सिटी वीमेन एसोसिएशन, पोस्ट सोसायटी इंडिया, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया, भारतीय लेखक संगठन, लेखिका संघ, इंडियन सोसाइटी ऑफ ऑथर्स, ऋचा (उपाध्यक्ष) और अखिल भारतीय महिला संघ ये सभी जानकारी ईमेल के द्वारा मिली हुयी हैं।

कमल कुमार का स्त्री अध्ययन से सम्बन्धित संस्थाओं और गैर-सरकारी संगठनों से जुड़ाव रहा है। लेखिका छुटपन से ही अपने इर्द-गिर्द लड़कियों के साथ होते भेद-भाव को देखती रही हैं। जिस कारण वो नारी जाति की भलाई के लिये कुछ करना चाहती थीं। इस कारण उनका नारी संस्थाओं से जुड़ाव हुआ ।

लेखिका के विचार उनकी AIWC के साक्षात्कार से उद्धृत है — AIWC संस्था Grass Root Level पर काम करती हैं, बच्चों को पढ़ाने लिखाने, सिलाई-कढ़ाई का काम सिखाती व स्वावलम्बी बनाती हैं।” कमल कुमार जिन संस्थाओं से जुड़ी वो इस प्रकार है- सचिव, भारतीय महिला परिषद (ऑल इंडिया वूमेन कान्फ्रेंस), दक्षिण दिल्ली शाखा, संचालक, स्त्री अध्ययन और विकास केन्द्र (वूमन स्टडी एंड डेवलपमेंट सेंटर), दिल्ली विश्वविद्यालय (जे०एम०सी०) सम्पादक संचालक, पत्रिका और स्कॉलरशिप, दिल्ली विश्वविद्यालय महिला परिषद (यूनिवर्सिटी वुमन एसोसिएशन ऑफ दिल्ली। सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय महिला परिषद। राष्ट्रीय स्त्री अध्ययन परिषद, स्त्री - शक्ति संबंध (वुमन पावर कन्टेक्ट)। ये सब जानकारी ईमेल द्वारा प्राप्त की गयी है। कमल कुमार ने स्त्रियों में

जागृति लाने के लिये कई प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया है। उनके द्वारा व्याख्यान, गोष्ठियाँ, सभायें, नाटक, नुक्कड़ नाटक एवं फिल्म के माध्यम से जागृति लाई गई है।

2.5. कमल कुमार का हिन्दी साहित्य में योगदान

ये बहुमुखी व्यक्तित्व एवं प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार लेखिका हैं। उनके सम्पर्क में आने पर ही उनकी प्रतिभा का आभास होता है। एक ही समय में वह बेटी, माँ, पत्नी, लेखिका व व्यक्ति नारी के रूप में अपनी भूमिका निभाती हुई दिखाई देती हैं। वह अपनी भीतरी प्रतिभा को न छुपाकर समाज के सामने प्रतिष्ठित साहित्यकार व साक्षात्कारकर्ता के रूप में सामने आती हैं और हिन्दी जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित करती हैं तथा साहित्य में प्रसिद्ध होती हैं।

साहित्यकार कमल कुमार ने बचपन से ही लिखना प्रारम्भ कर दिया था। लेखन में उनकी रूचि ने ही उन्हें साहित्य की पढ़ाई के लिए प्रेरित किया। स्वयं कमल कुमार साक्षात्कार में कहती हैं कि "बचपन से ही लेखन कार्य आरम्भ कर दिया गया था। बचपन से ही स्कूल-कॉलेज में जैसे ही अवसर आता था में उसमें प्रतिभागी बनती थी। कॉलेज की पत्रिका की छात्रा सम्पादिका भी रही। कॉलेज और इंटर कॉलेज के जितने भी आयोजन होते थे। उसमें कॉलेज की ओर से जाया करती थी। विशेष रूप से साहित्यिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया करती थी। इस प्रकार बचपन से ही लेखन व साहित्य के प्रति झुकाव रहा जिस कारण कविताएँ कहानियाँ लिखना आरंभ कर दिया। "पहली कहानी कॉलेज में प्रथम वर्ष में 'नवभारत टाइम्स' में 1963 में 'तीन देवियाँ' शीर्षक से प्रकाशित हुयी। यह कहानी स्त्री पर होते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी शोषण को हमारे सामने लाती है। पहले माँ सहती है, फिर उसकी बेटी सहती है, फिर उसकी बेटी को सहने के लिये मजबूर किया जाता है लेकिन तीसरी पीढ़ी की बेटी अपने ऊपर हो रहे जुल्म का विरोध करती है।

हिन्दी साहित्य जगत में कमल कुमार की प्रथम कहानी ही उन्हें विचारवान लेखिका के रूप में पाठक वर्ग के समक्ष रखती है। लेखिका की अपनी शोधकार्य एवं नौकरी के साथ-साथ रचनाएं प्रकाशित होती रहीं। 1970 से 1980 तक धर्मयुग, सारिका, साप्ताहिक, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान इत्यादि में रचनायें प्रकाशित होती रहीं। पहली काव्य रचना 'बयान' सन्मार्ग से 1980 में प्रकाशित हुई। इसके बाद निरंतरता में पुस्तकें प्रकाशित होती रहीं। कमल कुमार की अब तक लगभग 29 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

हिन्दी साहित्य में योगदान में कमल कुमार का महत्वपूर्ण योगदान है। साहित्य में किये गये आपकी रचनाओं की उपलब्धि इस प्रकार है-कमल कुमार ने अपने साहित्य के माध्यम से अपनी एक नयी पहचान बनायी जो स्त्री विमर्श से लेकर अन्य साहित्य विमर्श के लिए नया मार्ग प्रशस्त करता हो। साहित्य में उनकी रचनायें इस प्रकार दी गयी हैं— कहानी-संग्रह, उपन्यास, कविता संग्रह, आलोचना, शोधकार्य एवं अनुवाद की पुस्तकों पर सारगर्भित विवरण इस प्रकार दी गयी हैं-

2.5.1 उपन्यास

(क) अपार्थ

कमल कुमार ने अपार्थ उपन्यास की रचना की है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1986 है। इस उपन्यास का प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली है। इस उपन्यास में कुल 128 पृष्ठ हैं। लेखिका ने इसे दो भागों में विभाजित किया है। यह उपन्यास 'आत्महत्या की पृष्ठभूमि पर रचा गया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र व नायक अशोक सारी जिन्दगी उपेक्षा व वितृष्णा का शिकार बनता है। उसे उसके परिवार के द्वारा उपेक्षित जीवन जीने के लिये मजबूर किया जाता है। नायक जिंदगी भर अंधकार में ही चलता जाता है। रोशनी की छोटी सी किरण

भी उसे नहीं मिलती है पराजय की काली छाया उसका पीछा नहीं छोड़ती जिस कारण जन्म से लेकर मृत्यु तक वह अपनेपन व प्यार की तलाश में भटकता रहता है। अपनी जीवन - लीला को समाप्त कर देना एवं इस संसार को हमेशा-हमेशा के लिये छोड़कर चला जाना चाहता है। मरना या खुद को खत्म कर देना कोई आसान कार्य नहीं है। किन्तु अपनों के अभाव में जीने वाला इंसान आत्महत्या के अलावा कोई और रास्ता नहीं अपनाता और इसी तरफ चल देता है। नायक अशोक ताउम्र अपनी माँ के प्यार के लिये तरसता रहा परन्तु माँ के हाथों का नर्म स्पर्श हासिल न कर सका। जो माँ अपने बच्चों के लिये सारी जिन्दगी कष्ट सहती है उसी माँ ने उसकी मौत के लिये कई बार बद्दुआ की। सुरक्षा की छतरी बनकर बच्चों की रक्षा करने वाली ममतामयी माँ का रूप उससे कोसों दूर रहा। उसके जीवन में सिर्फ उसकी बहन निर्मला ही थी जिसने उसे समझा व प्यार दिया परन्तु लोकापवाद के चलते ससुराल पक्ष द्वारा उसकी हत्या कर दी गई।

अशोक अपनी बहन की मृत्यु का कारण स्वयं को समझता था। जिस कारण उसमें हीन भावना के साथ अपराध भावना ने भी जन्म ले लिया। माँ का रूप लेकर पत्नी सुधा उसके जीवन में आई किन्तु वो भी माँ की तरह ही उसे हर समय आँखों के तराजू पर तोलती रहती। सुधा ने अपनी महत्वाकांक्षा के कारण अशोक को ठुकरा दिया और उसके बॉस के साथ चलती बनी। जिस कारण उसे गहरा आघात पहुँचा। अपने जीवन में कभी माँ, भाई, पत्नी, बॉस व रघु (दोस्त) से मिलते लगातार झटकों के कारण अशोक इसे बर्दाश्त न कर सका और उसने आत्महत्या का रास्ता चुना। लेखिका ने बहुत बाखूबी अशोक के माध्यम से इस आत्महत्या के फैसले को गलत ठहराया है। अंतिम समय में जब गले में पड़ा फंदा उसे जीवन से दूर करता जा रहा था तब ही अशोक ने जिंदगी के महत्व को जाना। उसने माना कि वो जिंदगी को कुछ और तरह से जी सकता था किन्तु आत्महत्या करके उसने उस सुनहरे अवसर को गंवा दिया। कमल

कुमार का 'अपार्थ' उपन्यास अपनी सार्थकता को सिद्ध करता है। अपार्थ से अभिप्राय है अर्थरहित, निरर्थक, निरूद्देश्य व व्यर्थ। प्रस्तुत उपन्यास का नायक ही ताउम्र व्यर्थता बोध से घिरा रहता है वह स्वयं को निरर्थक समझकर अपनी जिंदगी खत्म कर लेना चाहता है और अंततः वह अपनी जीवन – लीला समाप्त कर लेता है।

(ख) आवर्तन

आवर्तन उपन्यास में भारतीय परिवेश में व्याप्त स्त्री-पुरूष सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है। इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1992 में हुआ । ये उपन्यास नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली से प्रकाशित किया गया है। इसमें कुल 122 पृष्ठ हैं। प्रस्तुत उपन्यास में पत्नी (पार्वती) शब्द रूप में और पति (अमर) उस शब्द में निहित अर्थ के रूप में सामने आया है। लेखिका ने अर्थ को सार्थक बनाने वाली मूल शक्ति शब्द को महत्व दिया है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक पढ़ा-लिखा युवक है और एक कॉलेज में प्रवक्ता के पद पर आसीन है। उसके चरित्र में हमें हीन भावना के दर्शन होते हैं। हिन्दी को पढ़ाने को लेकर उसे साथी सहयोगियों से कई बार बहस में शामिल होना पड़ता है। यह उसकी हिन्दी भाषा को लेकर जो मन में हीन ग्रंथि बैठ चुकी है उसी का प्रतीक है। उपन्यास का नायक अमर अपनी पत्नी के देहाती होने के कारण विदेशी लड़की मीरा रामचंद्रन के आकर्षण में बंधने लगता है किन्तु मीरा की एक फटकार ही उसे पुनः घर का रास्ता दिखा देती । लेकिन घर पर भी वह पार्वती से बेरूखी से पेश आता है। पार्वती के कितनी बार विनय करने पर भी वो बच्चे के लिये डॉक्टर को बुलाकर नहीं लाता है। जिस कारण तबीयत बिगड़ने के चलते उसके बेटे की मृत्यु हो जाती है। पार्वती अपने बच्चे की मौत का दोषी उसे मानती है और उसे छोड़कर मायके चली जाती है।

अमर पार्वती से मिली दुत्कार को बर्दाश्त नहीं कर पाता है। अमर के अहं को जो चोट पहुँचती है उसका खामियाजा अमर के रिश्ते में लगती भानजी से चुकाना पड़ता है। अमर मिनाली से दैहिक सम्बन्ध बनाता है जो उसके चरित्र की गिरावट को उघाड़ता है। अमर ने सभी नारियों के देह के परे उनको जानने की कोशिश न की। जिस कारण अपने अहम व हीन ग्रंथि के चलते कुकृत्य करने से भी पीछे न रहा। प्रस्तुत उपन्यास में नारी के विभिन्न रूपों के चित्र मिलते हैं। मीरा आधुनिक व स्वतंत्र नारी, पार्वती संस्कारी, भारतीयता को ओढ़े किन्तु बच्चे की मृत्यु पर पति को निर्मम तरीके से ठुकारती और मिनाली के रूप में युवा लड़की का चित्र खींचा है। पार्वती के व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण ही अंत में अमर पूरे घर में उसे याद करने लगता है। उसी की स्मृतियों में अपनी जिंदगी जीने लगता है। अमर पार्वती को पुनः अपनी जिंदगी में लाना चाहता है जो कि भारतीय परिवेश में पति-पत्नी के रिश्ते की सच्चाई को ही हमारे समक्ष लाता है किन्तु अब प्रश्न पार्वती को लेकर मन में रह जाता है कि क्या वह अमर की सच्चाई को जानकर उसे अपनाना चाहेगी?

(ग) हैमबरगर

'हैमबरगर' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 1996 है और हिन्दी बुक सेन्टर से प्रकाशित किया गया। इसमें कुल 188 पृष्ठ संख्या है। अमेरिका की भोगवादी संस्कृति का प्रतीक हैमबरगर हमें अमेरिका के लोगों की जीवन-शैली व संस्कृति से परिचित करवाता है। भारत के परिवेश से शुरू होकर अमेरिका के परिवेश तक का विवरण प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है। यह दो देशों व संस्कृतियों की यात्रा है जिसमें लेखिका ने बहुत ही सर्वोत्कृष्ट ढंग से दोनों देशों में पाये जाने वाले अंतर और इसमें मिलते मुख्य व गौण पक्षों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। भारतीय परिवेश में जहाँ परिवार द्वारा लड़कों को तो हर तरह की स्वतंत्रता का आनन्द लेने दिया जाता है वहीं लड़कियाँ हजारों बंधनों में जकड़ी हुयी गलती न करने की सूरत में भी सजा की हकदार

समझी जाती हैं। इस उपन्यास की नायिका रतीन्द्र अपने मंगेतर के हाथों बलात्कार की शिकार बनती है और गर्भ ठहरे जाने पर मंगेतर की दुत्कार मिलती है और अपने परिवार के द्वारा उसका साथ छोड़ने पर आत्महत्या करने निकलती है पर अमेरिका से लौटी उसकी चाची उसे बचा लेती हैं और अपने साथ अमेरिका ले जाती हैं। इस तरह रतीन्द्र भारतीय परिवेश से निकलकर अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र में कदम रखती है। अमेरिका में आर्थिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ देह की भी स्वतंत्रता है।

यहाँ कोई किसी को जीवन जीने से नहीं रोकता है। अमेरिका में रहने वाले भारतीय अब भी भारतीय संस्कारों व मूल्यों से जुड़े हुये हैं किन्तु उनकी नई पीढ़ी पश्चिम के संस्कारों व मूल्यों में अपनी जिंदगी जीना चाहती है। पश्चिम में रहते भारतीय माता-पिता उन्हें भारतीय संस्कारों से जोड़कर रखना चाहते हैं। यहीं पर पुरानी व नई पीढ़ी के टकराव की स्थिति बनती है। विदेश में देह को ही सब कुछ मान लिया जाता है। जिस कारण प्रेम में निरर्थकता ही हासिल होती है। इसलिये नायिका रतीन्द्र अब तक प्यार को न समझ सकी। नायिका मंगेतर से पैदा हुये बच्चे को कभी भी अपना नहीं पाती और अंततः उपन्यास के अन्त में उस बच्चे को उसके पिता के पास भारत में छोड़ आती है। जिस बच्चे को कभी यह कहकर अपनाया न गया था कि वो नाजायज है। आज उसी बच्चे के लिये कुलवीन्द्र का परिवार रतीन्द्र के आगे नाक रगड़ता है। यह उपन्यास नायिका के जीवन के विभिन्न पक्षों को हमारे सामने रखता है और भारत के छोटे से गाँव में अमेरिका तक की विकास यात्रा में उसके व्यक्तित्व में उभरकर आते गुणों को सामने लाता है।

(घ) यह खबर नहीं

'यह खबर नहीं' उपन्यास वर्ष 2000 में अखिल भारती से प्रकाशित किया गया है। इसकी पृष्ठ संख्या 156 है। इस उपन्यास में लेखिका ने अपने जीवनानुभव से प्रेरित होकर जीवन की सत्य घटनाओं से जुड़कर इसकी रचना की है। यह उपन्यास जीवन में घटित होते यथार्थ को हमारे सामने लाता है। आम जन की त्रस्त स्थिति का रेखांकन यहाँ बखूबी मिलता है। आमजन नेताओं, अफसरों व प्रशासन के हाथों शोषित होता है और उसकी नियति ही शक्तिशाली के हाथों पिसना रह गई है। देश को आजाद हुये इतना समय हो चुका है किन्तु देशवासियों की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। उनकी हालत बद से बदतर होती जा रही है। देश प्रगति नहीं कर रहा किन्तु सरकारी कागजों में, कार्यालयों में पड़ी फाईलों में देश विकसित देशों को भी पीछे छोड़ रहा है। आम व्यक्ति रोटी, कपड़ा व मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिये दिन-रात मेहनत करता है लेकिन फिर भी इन जरूरतों को जुटाने में उसे निराशा ही हाथ लगती है। देश में छपने वाले विभिन्न अखबार जितनी भी खबरें देते हैं उन्हें महत्वपूर्ण न जानकर कचरे की पेटी में फेंक दिया जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक हमें सोचने के लिये विवश कर देता है कि जब हम अपने आस-पास त्रस्त लोगों को देखते हैं और जिनकी खबरें हम अखबार के पन्नों पर छपी देखते हैं तो वह सिर्फ एक ख़बर नहीं है बल्कि हमारे आम जन की सच्चाई है। जिसे देश में रहने का और लोकतंत्रीय सरकार का चुनाव करने का परिणाम भोगना पड़ता है। साधारण व्यक्ति लम्बे ट्रैफिक जाम में फंसता है ताकि नेताओं की सवारियाँ सुरक्षित ढंग से निकल सकें। बच्चे का जन्म चौराहे पर होता है क्योंकि जाम में फंसने के कारण वो लोग समय पर अस्पताल न पहुँच सके। यह सभी स्थितियां हमें 21वीं सदी के माहौल की प्रतीत होती हैं। लोकतंत्र होने पर भी तानाशाही का वातावरण बना रहता है। नेताओं द्वारा अपने फायदे के लिये घपले किये जाते हैं। हिंसा, भ्रष्टाचार,

बलात्कार व हत्या उनके लिये कोई मायने नहीं रखते। नेताओं के चेहरे पर नकाब है और जगत के अनुसार नकाब बदले जाते हैं। कहानी में कर्मवीर ख़बरें लिखता है किन्तु अन्त में उसे भी ख़बर बना दिया जाता है क्योंकि झूठ व अन्याय की दुनिया में सच की कीमत चुकानी ही पड़ती है।

(ङ) मैं घूमर नाचूँ

कमल कुमार का यह मौलिक उपन्यास है। यह वर्ष 2010 में राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास में 279 पृष्ठ संख्या है। इसमें कमल कुमार ने राजस्थान की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर नायिका के जीवन में घटित होते यथार्थ को हमारे समक्ष रखा है। नायिका कृष्णा बचपन में ही बाल-विधवा हो जाती है और फिर पिता उसका पालन पोषण करते हैं। कृष्णा जब बड़ी हो जाती है तब उसका पुनर्विवाह डॉ० शाह से कर दिया जाता है। कृष्णा पति डॉ० शाह व तीन बच्चों अजय, अभय व मीनू के साथ अपनी जिंदगी बिता रही होती है। जब डॉ० आयुष उसके जीवन में प्रेम के नए रंग लेकर आता है। डॉ० आयुष के साथ उसका रिश्ता भावात्मक से होते हुये देह के स्तर पर पहुँचता है। नायिका के आंतरिक भावों को और लोक कलाओं के प्रति प्यार को डॉ० शाह कभी न समझ पाये। डॉ० शाह से कृष्णा का रिश्ता सिर्फ देह तक ही सीमित रहा। डॉ० शाह उसे हमेशा नकारते रहे जिस कारण उसकी स्वयं की पहचान ही कहीं खो चुकी थी किन्तु आयुष का आगमन उसके भीतर की खाली जगह को भरने का काम करता है और उसे सम्पूर्ण औरत बनाता है। उसके सम्पर्क से कृष्णा फिर से जीवन के प्रति आशान्वित होती है। प्रेमी से गर्भ ठहर जाने पर समाज व परिवार उसे नकारता है किन्तु वह खुशी-खुशी अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ती है।

कृष्णा अपने भीतर कोख में पल रहे नन्हे जीव को जन्म देना चाहती है उसका मानना है कि सिर्फ यह बच्चा उसकी अपनी मर्जी से है। बाकी के तीन बच्चे डॉ० शाह की पुरूष काम वासना के द्योतक हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने समाज के अंधविश्वास जैसी बुराई की ओट में नारी के साथ हो रहे शोषण को लेकर आवाज उठाई है। उपन्यास के अंत में कृष्णा के बच्चे उसके फैसले का सम्मान करते हैं और उसका साथ देते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास नारी की पैराडाइम शिफ्ट की कहानी को हमारे सामने लाता है।

(च) पासवर्ड

कमल कुमार के द्वारा रचित 'पासवर्ड' उपन्यास 2010 में सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित किया गया। इसके 240 पृष्ठ हैं। प्रस्तुत उपन्यास की कथा ईमेल के माध्यम से निरंतर आगे बढ़ती है। यह मूलतः प्रेम कथा है। जिसमें सूत्राधार नायिका नायक (आशीष) के दूर चले जाने पर उससे ईमेल के जरिए जुड़ी रहती है। नायिका का प्रेम द्वैत से अद्वैत की यात्रा करता है। जिसमें नायक का उसकी जिन्दगी में आना नायिका के भीतर की औरत की तलाश में मददगार बनता है। नारी परिवार में ऐसी व्यस्त हो जाती है कि उसकी स्वयं की क्या सोच है, क्या जरूरतें है, उन सबकों वह नजरअंदाज कर देती है। इसमें नायिका नायक के माध्यम से स्वयं को प्यार करना सीखती है। लेखिका ने इस पुस्तक को उत्तर - आधुनिकता से जोड़ा है। जहाँ नारी अपनी औरत की तलाश करती है और प्रेमी से देह से होते हुये आत्मा का रिश्ता जोड़ती है। इस दौरान नायिका के मन में कोई अपराध-बोध भी नहीं होता । नायिका अपने भीतर छिपी औरत को खोज लेती है और उसे किसी प्रकार का दुःख व अपराध बोध भी नहीं है कि उसने क्या किया।

इसमें नायक और नायिका के रिश्ते में किसी भी दृष्टि से कोई अनुकूलता हमें ज्ञात नहीं होती । तब भी दोनों का यह रिश्ता कुछ सालों तक प्यार में बंधा रहता है। नायिका जानती है

कि ये रिश्ता हमेशा रहने वाला नहीं है। किन्तु फिर भी वे लोग मिलते है। उनमें कहीं पर भी लेन-देन की भावना नहीं मिलती है । उनका प्रेम सिर्फ सेक्स नहीं है । नायिका का नायक से रिश्ता आत्मा से देह तक जाकर अपनी सार्थकता हासिल करता है। इसमें नायिका ने अपने आस-पास में घटित घटनाओं का ब्यौरा भी प्रस्तुत किया है। जिससे उसके समाज के सक्रिय नागरिक होने का पता चलता है। पासवर्ड नये युग को समाज के समक्ष रखता है, यह ऐसा उपन्यास है, जिसमें नारी अपने जीवन में समानांतर संसार का सपना रचती है जिसकी अपनी इच्छायें हैं जिसे वो पूर्ण करना चाहती है।

2.5.2. कहानी संग्रह

(1) कहानी संग्रह : पहचान

कमल कुमार का प्रथम कहानी संग्रह पहचान है। इस कहानी संग्रह का प्रकाशन 1984 में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें दस कहानियाँ संकलित की गई है। जिसमें - शायद, पहचान, बाल-तोड़, सरोकार, आखेट, बाढ़, बेटे, परिणति, समय-बोध तथा कोल्हू के बैल हैं। इस कहानी संग्रह की पृष्ठ संख्या 116 है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में लेखिका ने मानवीय रिश्तों के बदलते स्वरूप, नैतिकता के पतन, संयुक्त परिवारों के विघटित स्वरूप, पुरूषवादी मानसिकता, महानगरीय जीवन व मध्यवर्गीय परिवार मुख्य विषय के रूप में हमारे समक्ष उभरकर आते हैं। कहानी-संग्रह की शीर्षक कहानी 'पहचान' में नायिका अपने अस्तित्व की तलाश में भटकती है और अपनी पहचान बनाने की उत्कट अभिलाषा ही उसे पारिवारिक जीवन से दूर लेकर चली जाती है अपने अधिकारों को लेकर वो सजग है। कहानीकार ने इस नायिका का ऐसा चित्र पाठक वर्ग के समक्ष रखा है कि समस्त नारी जाति में अपने अस्तित्व को लेकर जागरूकता आ जाती है। लेखिका की बाल - तोड़, शायद, बाढ़ जैसी कहानियाँ

पुरूषवादी मानसिकता पर चोट करती है। वहीं बेटे एवं परिणति कहानियों में बच्चों के द्वारा बुजुर्ग माता- -पिता की जिम्मेदारी को उठाने से इंकार कर देना उनकी कर्तव्य परायणता पर सवाल खड़ा कर देता है।

पहचान, बाल-तोड़ व सरोकार कहानियाँ श्रमिक वर्ग की व्यथा को बखूबी प्रस्तुत करती हैं। आखेट व समय-बोध कहानियाँ महानगरीय जीवन के सत्य को उद्घाटित करती हैं और इसी महानगरीय जीवन-शैली में बिगड़ैल बच्चों के जीवन को हमारे सामने लाती है। इन विषयों के अतिरिक्त लेखिका कमल कुमार ने सम्बन्धों में आये ठंडेपन, भ्रष्ट तंत्र के विकृत स्वरूप, भौतिकवादी प्रवृत्ति, नैतिक मूल्यों के विघटन, समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था और रंग भेदभाव की नीति आदि विषयों पर भी अपनी लेखनी चलाई है। उनकी कहानियों में आधुनिकता के प्रभाव तले जी रहे भारतीय जनमानस की झांकी परिलक्षित होती है जिस युग में इंसान जी रहा है। उस समय का प्रभाव उसके दैनिक जीवन पर व उसके व्यवहार सम्बन्धों पर दिखाई देता है। कमल कुमार ने यथार्थ जीवन से ही अपने पात्रों को लिया है। जिससे उनके पात्र सजीव लगते हैं और अपने समय का सत्य हमारे समक्ष रखती हैं।

(2) कहानी संग्रह : क्रमशः

क्रमशः कहानी संग्रह कमल कुमार द्वारा रचित है। इसका प्रकाशन वर्ष 1996 में तथा भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित किया गया। इसमें 12 कहानियाँ संकलित हैं जो इस प्रकार हैं- क्रमशः, एक झरना मेरे लिये, सफर, खेल, महक, अपना शहर, निरस्त, सीढ़ियाँ, औरत और पोस्टर, मर्सी किलिंग, अंतर्यात्रा और खोखल | इस कहानी संग्रह की पृष्ठ संख्या 123 है । प्रस्तुत कहानी - संग्रह की शीर्षक कहानी 'क्रमशः' में प्रकृति की परिवर्तनशीलता के नियम का मानवीय जीवन में हुये परिवर्तन से सम्बन्ध जोड़ते हुये बनाया गया है। कहानी में पुत्र

की मृत्यु के पश्चात बिखर चुके घर में पौत्र के जन्म के साथ ही खुशियों की बहार आ जाती है। जैसे प्रकृति में पतझड़ के बाद बसन्त के आने से बहार आती है। वैसे ही रमानाथ, लक्ष्मी और सरिता के जीवन में बच्चा बहार लाता है यह कहानी हमें निराशा से आशा की ओर लेकर चलती है। मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत इस कहानी में लेखिका ने पाठकों के दिल को छू लेने का कार्य किया है। एक झरना मेरे लिये, खेल और सीढ़ियाँ कहानी में आधुनिक नारी का चित्रण बखूबी किया है। एक झरना मेरे लिये की नायिका सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से सशक्त है। अधिकारों के प्रति सजग व लिंगभेद, रंगभेद के विरूद्ध है संवेदनाओं से ओत-प्रोत व झूठे आडम्बरों के खिलाफ रही नायिका नायक के योजनाबद्ध रूप से प्रेम को अभिव्यक्त करने पर नाराजगी जाहिर करती हुयी उसे पहाड़ से असली झरना लाने को कहती है । खेल कहानी में आशा गुप्ता सरकारी योजनाओं में फैले भ्रष्टाचार पर रिपोर्ट तैयार करने जाती हैं किन्तु वहाँ अपने बेटे की ही उम्र के डॉक्टर से प्रेम का खेल खेलने लगती है। जो आधुनिक नारी की बदलती हुयी मानसिकता को सामने लाता है। सीढ़ियाँ कहानी में नीरू प्रेम के पीछे भागती हुयी सच्चे प्रेम को नज़रअंदाज करके अपनी महत्वाकांक्षा और स्वार्थ के चलते अनिल की ओर झुकती है। पर उसे सिर्फ निराशा ही हाथ लगती है। सीढ़ियाँ सिर्फ ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर जाने के काम आ सकती है कभी मंजिल नहीं बन सकती हैं इसीलिये नीरू विजय के सच्चे प्यार को अपनाने में ही भलाई समझती है ।

‘निरस्त' कहानी में निर्मला पारिवारिक जीवन को महत्त्व देती हुई बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिये अपने पति के बुरे व्यवहार को सारी जिन्दगी झेलती है, किन्तु अन्त में उसके तीनों बच्चें उसके अस्तित्व को बनाने और सामाजिक स्थिति को सुधारने में मददगार साबित होते हैं । 'औरतें और पोस्टर’ कहानी के जरिये औरत के अन्तर्मन में चल रहे द्वन्द्व और भय की स्थिति का वर्णन किया है। औरत को सिर्फ सेक्स भोग्य की सामग्री के रूप में फिल्मों में

परोसा जाता है। 'मर्सी किलिंग' कहानी में उषा अपने अपाहिज व लाचार पति को संभालती हुयी उसी के ऑफिस में नौकरी करके घर के लिये आजीविका कमाती है। मुश्किल की इस घड़ी में उसके सारे रिश्तेदार अपना पल्लू छुड़ाकर भाग खड़े होते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर नायिका को ऑफिस में लोगों द्वारा झूठी सान्त्वना दी जाती है। यहाँ पुरूष वर्ग की मानसिकता भी देखने को मिलती है। जहाँ उसकी मजबूरी का फायदा उठाने की कोशिश की जाती है। नायिका यौन इच्छा की पूर्ति न होने के चलते अपने पति पर भी जब तब अपना गुस्सा निकालती रहती है। 'अंतर्यात्रा' कहानी में नारी के अन्तर्मन के द्वन्द्व को उघाड़ा गया है कि कैसे अजन्मी बच्ची को मारने की साज़िशें होती हैं और इस दुनिया में लाने का अधिकार नारी को नहीं दिया जाता। लेखिका ने वैज्ञानिक अविष्कारों के अभिशाप में बदलने और लिंग भेदभाव के मुद्दे को उठाया है। इसमें साथ ही 'खोखल' कहानी के माध्यम से धर्म, दर्शन की किताबों के खोखल को आधुनिक लोगों द्वारा सिर्फ बाह्य दिखावे के रूप में रखने पर लेखिका ने व्यंग्य किया है। यह नारी के विविध रूप व मनोविज्ञान की झांकी प्रस्तुत करता है। विज्ञान के दुष्प्रभाव व आधुनिक जीवन में बढ़ती दिखावे की प्रवृत्ति पर चोट भी करता है।

(3) फिर वहीं से शुरू

'फिर वहीं से शुरू' (कमल कुमार) कहानी संग्रह का प्रकाशन वर्ष 1998 है। यह सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित है। इसमें 12 कहानियों का संग्रह है जिसमें फिर वहीं से शुरू, काला और सफेद, दस्ताना, पुल, उऋण, टैडी बियर के नाम है थारो, क्षेत्रयज्ञ, मुक्त, ऊपर वाले की कृपा, कैटलिस्ट और व्यामोह है। इस कहानी संग्रह की कुल पृष्ठ संख्या 128 है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की शीर्षक कहानी 'फिर वहीं से शुरू' में लेखिका ने जिन्दगी की शुरूआत आदि से करते हुये बताया है कि हर पीढ़ी की जिन्दगी आदि से ही आरम्भ होती है। जिन्दगी में कई ऐसे पड़ाव आते हैं जहाँ दोबारा से जीवन की शुरूआत की जाती है। इसमें पुरानी

व नई पीढ़ी के विचारों व जीवन दृष्टि में अन्तर के कारण उपजी समस्याओं का चित्रण है। कमल कुमार ने विविध विषयों की छटा इस कहानी-संग्रह में बिखेरने की कोशिश की है और इसमें वह पूर्णतः सफल भी सिद्ध हुई हैं। फिर वहीं से शुरू व क्षेत्र यज्ञ में नारी अपने ज़िन्दगी के निर्णय स्वयं लेती है और वहीं दूसरी तरफ के नाम है थारों और 'कैट लिस्ट' कहानियाँ नारी के अधिकारों को छीनने से सम्बन्धित हैं। 'पुल' कहानी में सविता अपने पिता के हाथों शरीरिक व मानसिक शोषण का शिकार बनती है एवं इसमें पिता की भूमिका पर सवालिया निशान खड़ा हो जाता है। वहीं 'कैटलिस्ट' कहानी में मिस सिंह बचपन से जवानी तक अपनी सौतेली माँ के द्वारा शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न की शिकार बनती है। 'ऋण' व 'क्षेत्र यज्ञ' कहानियों में डॉक्टरी पेशे में नैतिक दृष्टि से आई गिरावट के कारण मरीजों का डॉक्टरों से विश्वास उठता जा रहा है। 'ऊपर वाले की कृपा' कहानी में राजनैतिक दलों से आश्रय प्राप्त लोगों की स्थिति व राजनीतिज्ञों से अपना स्वार्थ साधने वाले लोगों की फितरत बयान की गई है। 'काला और सफेद' दास्तना के माध्यम से हर इंसान के दृष्टिकोण में अंतर बताते हुये सकारात्मक नज़रियें से हमारी जिंदगी में होते परिवर्तनों को सामने लाया गया है। इस तरह कहानीकार ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रत्येक वर्ग को समेटने का कार्य किया है। नारी के प्रति समाज की सोच, पितृसत्ता के सामन्तशाही शासन तले दबती स्त्रियाँ, जिंदगी के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण, नैतिक मूल्यों में आई गिरावट व हाशिये पर रखे गये लोगों की स्थिति का चित्रण भी हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

(4) कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ (कहानी संग्रह)

कमल कुमार द्वारा रचित 'कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ' कहानी संग्रह है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में पाठक वर्ग के दिल में जगह बनाने वाली कुछेक कहानियों को लिया गया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह का प्रकाशन वर्ष 2015 है और प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित

किया गया है। इसमें कुल 17 कहानियाँ संकलित हैं जो इस प्रकार है- अपना शहर, लोकतंत्र, महक, लहाश, कमलिनी, काफिर, नालायक, जंगल, धारावी, अपराजेय, मदरमेरी, करोड़पति, कुकुज, नेस्ट, घर - बेघर, अनुत्तरित, पुत्र व पिंडदान है। प्रस्तुत कहानी - संग्रह की पृष्ठ संख्या 175 है। प्रस्तुत संग्रह में लेखिका ने एक तरफ मानवीय सम्बंध के बिखरते रूप को तो दूसरी तरफ परायों का दर्द समझते मानव का चित्रण भी किया है। एक ओर वोट की राजनीति करता हुआ वर्ग है तो दूसरी ओर दंगों की बलि चढ़ता इंसान है। एक ओर जहाँ नारी आधुनिक जीवन में अपनी सीमाओं को स्वयं तय करती है तो दूसरी ओर रेप पीड़ित औरतें हैं, जिन्हें अपने जीवन की राह चुनने के लिये दूसरों पर आश्रित होना पड़ता है। एक ओर लेखिका किन्नरों की समस्याओं को सामने लाती हैं तो वहीं दूसरी ओर जाति भेदभाव की बलि चढ़ते प्रेमी जोड़ों का चित्र खींचती है। प्रस्तुत संग्रह की लोकतंत्र, लहाश, कमलिनी, धारावी, मदरमेरी, करोड़पति व कुकुज नेस्ट बहुत ही संवेदनशील, ज्वलन्त व समाज का सच्चा आईना दिखाती कहानियाँ हैं।

'लोकतंत्र' कहानी समाज में फैले भ्रष्टाचार व वोट की राजनीति करते नेताओं को हमारे सम्मुख रखती है। जिनकी नज़र में बेरोजगार युवा को सही दिशा देना कोई महती कार्य न होकर सिर्फ अपने फायदे की बात सोचना ही महत्वपूर्ण रह गया है। ‘लहाश' कहानी औरत के मन में पनपते असुरक्षा के भाव को और पति-पत्नी के काम-सम्बंधों के दौरान पति द्वारा पत्नी को लहाश सम्बोधन देने व उसको जीते जी मार देने के विषय पर रची गई है। इसमें युवा वर्ग के नौकरी के लिये मिलती भटकन को भी विषय रूप में लिया गया है। 'कमलिनी' कहानी स्वाभाविक रूप से औरत के भीतर छुपे हुये डर को रेखांकित करती है और पुरूष जाति पर उठते विश्वास के कारण भले मानुष व्यक्ति को भी शक के आधार पर परखती है। लेखिका में बहुत ही खूबसूरत तरीके से गंदगी में भी सुन्दर कमल खिलने के प्रतीक को समाज में बुरे लोगों

के बीच कुछ अच्छे लोगों के साथ जोड़कर देखा है। 'धारावी' कहानी जाति भेदभाव को सामने लाती है। प्रस्तुत कहानी में नायिका की हत्या दलित होने के कारण कर दी जाती है।

'मदरमेरी' अकेली औरतों द्वारा बिना किसी पुरुष के सहारे के बच्चे को पालने और इनमें पेश आती समस्याओं से जूझने की कहानी है। 'करोड़पति' कहानी कंजूस व्यक्ति द्वारा ताउम्र वर्तमान में न जीकर भविष्य की चिंता में जीने को सामने रखती है। कहानी में पति पत्नी की इच्छाओं का सारी जिन्दगी गला घोटता जाता है और अंत में उसकी पत्नी अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये अपनी जिन्दगी को अपने तरीके से जीने लगती है। 'कुकुज नेस्ट' कहानी बहुत ही संवेदनशील कहानी है जिसमें कि नायिका एक महिला किन्नर है। उसकी सच्चाई को समाज से छिपाया जाता है और उसे पढ़ा-लिखाकर सक्षम बनाया जाता है। वह विदेश से अपना ईलाज करवाकर वापिस अपने देश लौटती है। इस प्रकार लेखिका की समस्त कहानियाँ समाज को साहित्य में लेकर चलती हैं। कहीं समाज की समस्याओं को तो कहीं मानव के आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति करती हैं। दिल को छू जाने के कारण ही यह सभी कहानियाँ पाठक वर्ग को लुभाती हैं और उसे सही दिशा भी दे जाती हैं।

(5) कहानी संग्रह : वैलेन्टाइन डे

कमल कुमार का कहानी संग्रह वैलेन्टाइन डे का प्रकाशन वर्ष 2007 में कीन बुक्स, दिल्ली से प्रकाशित है। इस कहानी संग्रह में 12 कहानियाँ संकलित हैं जो इस प्रकार हैं- फॉसिल, चौराह, सूखा, अनुत्तरित, वैलेन्टाइन डे, पिकनिक, अम्मा, कीच, दो दूनी पांच, विस्थापित, क्षेत्रज्ञ और पार्टनर है। 'वैलेन्टाइन डे' कहानी संग्रह की पृष्ठ संख्या 144 है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की फॉसिल, पिकनिक व विस्थापित कहानियों में लेखिका ने पितृसत्ता के सामंत शाही शोषण की शिकार नारियों का चित्रण किया है और इन सभी के अधिकारों को समाज

द्वारा छीना जाता है। उन्हें जीवन-साथी को चुनने के अधिकार से वंचित रखा जाता है। फॉसिल, पिकनिक और विस्थापित कहानियों में लेखिका ने अगर उनकी दयनीय स्थिति से हमारा परिचय करवाया है तो अंत में उनके खण्डित होते व्यक्तित्व में रोशनी की किरण को भी चमकते हुये दिखाया है, ये सभी कहानियाँ निराशा से आशा की तरफ बढ़ती हैं। चौराह, सूखा, अम्मा और कीच कहानियों में बदलते मानवीय रिश्तों, संवेदन शून्यता की स्थिति पुरानी पीढ़ी के विचारों को दकियानूसी समझने उपरोक्तवादी प्रवृत्ति के प्रसार, महानगरीय जीवन की त्रासदी और ब्रेन - ड्रेन की समस्या को हमारे समक्ष रखा गया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की 'अनुत्तरित' कहानी में लेखिका कमल कुमार विकलांग बच्चों की समस्या को लेकर हमारे सामने आती हैं जिसमें विकलांगता को भारत वर्ष में अभिशाप से कम नहीं आंका जाता है।

विकलांग बच्चों के माता-पिता के दृष्टिकोण और विकलांग बच्चों के शारीरिक शोषण का मुद्दा भी उठाया गया है। इसके साथ ही कमल कुमार ने वैलेन्टाइन डे' व 'दो दूनी पांच' के माध्यम से प्रेम कथाओं को हमारे समक्ष रखा है। 'वैलेन्टाइन डे' में संजय सिंह को जिंदगी के अंतिम पड़ाव में जाकर यह अहसास होता है कि वह जिस प्रेम के पीछे सारी जिंदगी रेत में भटकता रहा, उस प्रेम का सच्चा व मूल स्रोत उसकी अपनी पत्नी थी और अंततः वो वापिस अपनी पत्नी सुनयना के पास लौटता है। 'दो दूनी पांच' में प्रेम की सच्ची अनुभूति को लिए मानसी न सिर्फ अपने प्रेम से उत्पन्न उस बीज को न सिर्फ जन्म देती है बल्कि उसका पालन–पोषण करती हुई समाज के सामने भी लाने से नहीं घबराती है। मानसी संजीव के प्रति निःस्वार्थ प्रेम से जुड़ी होती है और अंत में नायक से बिना कोई अपेक्षा रख अपनी जिदंगी में आगे कदम बढ़ाती है। समग्रतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी - संग्रह में कमल कुमार ने नारी जीवन के विभिन्न रूपों, मानवीय भावों और प्रेम के विभिन्न स्वरूपों को लेकर उसकी रचना की है |

(6) कहानी संग्रह : अन्तर्यात्रा

अन्तर्यात्रा (कमल कुमार) का प्रकाशन वर्ष 2008 में रेमाधव पब्लिकेशन्स प्रा० लि0 उ0प्र0 से प्रकाशित किया गया है। इस कहानी-संग्रह में 19 कहानियाँ संकलित की गई हैं जो इस प्रकार हैं- जंगल, पूर्णविराम, वैलेन्टाइन डे, सखियाँ, नालायक, अपराजंय, फॉसिल, मर्सी किलिंग, बेघर, उऋण, के नाम है थारों, महक, अम्मा, कीच पार्टनर, खोखल, कैटलिस्ट, अनवरत और अन्तर्यात्रा। प्रस्तुत कहानी-संग्रह की समस्त कहानियाँ लेखिका द्वारा लिखे गये पांच कहानी - संग्रह से पहले भी छप चुका है। पहले कहानी-संग्रह से लेकर छठे कहानी संग्रह तक लेखिका के लेखन कार्य में प्रगाढ़ता आई है। उसका अनुभव पाठक वर्ग भी करता है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह में लेखिका ने नारी के विविध रूपों को हमारे सामने रखा है। पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण करती हुयी, जीवन में अपने सुख के लिए नये अर्थ तलाशती, समलैंगिक सम्बन्धों में सुख तलाशती, पितृसत्ता के सामन्त शाही शासन को झेलती, वैधव्य जीवन को ढोती, बच्चों पर अपनी ममता छिड़कती, सौतेली मां की पीड़ा से त्रस्त अजन्में बच्चे को जन्म देने की चाह लिए घुटती नारी, अपने अस्तित्व के लिए आवाज़ उठाती नारी का चित्र हमारे सामने उभरता है। पुत्रों द्वारा माता-पिता की जिम्मेदारी को न उठाते हुए उनके प्रति अपने कर्तव्य से विमुख हो जाना है, पश्चिम की तरफ भागती युवा पीढ़ी और भारत में माता-पिता के प्रति कर्तव्यों को भूलती युवा पीढ़ी का वर्णन इसमें देखने को मिलता है। अंततः महानगरीय जीवन की त्रासदी और रिश्तों में घुलते ज़हर को प्रस्तुत करती कहानियां समाज के सत्य को उद्घाटित करती हैं।

कहानी संग्रह : घर - बेघर :

कमल कुमार का घर - बेघर कहानी - संग्रह 2007 में, पेंगुइन बुक्स इंडिया, यात्रा बुक्स, नई दिल्ली से प्रकाशित है। इस कहानी - संग्रह में 12 कहानियां संकलित की गई है जो इस

प्रकार है- नालायक, अपराजेय, घर - बेघर, पूर्ण विराम, जंगल, मुझे माफ कर दो, पांच मिनट का मौन, पालतू, छतरियां, सखियां, गुड मॉर्निंग मिस और काफ़िर। घर- बेघर कहानी संग्रह में 169 पृष्ठ संख्या है। नारी के परिवर्तन स्वरूप, समाज व पुरूष की दोगली मानसिकता, नारी संवेदनाओं से खेलता समाज, ब्रेन-ड्रेन की समस्या, माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्यों से विमुख बच्चे, आंतरिक संवेदना से शून्य होता समाज, समलैंगिक सम्बन्धों और प्रेम को लेकर लेखिका ने प्रस्तुत कहानी संग्रह की रचना की है। समाज की संरचना में परिवार घर की जो महत्ता है। उसे आधुनिक पीढ़ी द्वारा झुठलाया जाता है। आज की पीढ़ी पश्चिमी देशों की नकल करके घर की परिभाषा को सिरे से नकार रही है और घर की जगह मकान खड़े किये जा रहे हैं। इसी विषय को लेकर लेखिका ने घर - बेघर नामक कहानी लिखी है। घर - बेघर कहानी में दोनों बेटे माता-पिता के देखभाल की जिम्मेदारी को न निभाते हुए पश्चिम के संस्कृति की ओर भागते हैं। माता-पिता के मर जाने पर उनके दाह-संस्कार तक में भी वे शामिल नहीं होते हैं। अंततः घर के होने के बावजूद भी वे बेघर की तरह खुद को महसूस करते हैं। 'जंगल' कहानी नारी के आधुनिक व पश्चिमी जीवन शैली से प्रेरित व्यक्तित्व को हमारे सामने रखती है। 'मुझे माफ कर दो' कहानी समाज की दोहरी मानसिकता का अंकन करती है। पुरूष स्वयं के लिए तो नियमों में ढील चाहता है किन्तु नारी के सन्दर्भ में उन्हीं नियमों को कड़ा कर देता है।

'सखियाँ' कहानी में अपने-अपने पति के हाथों घरेलू हिंसा की शिकार सखियाँ एक-दूसरे से भावात्मक सम्बन्धों में शारीरिक सम्बन्धों के धरातल पर आकर जुड़ती हैं पुरुष के द्वारा औरत को सिर्फ देह तक सीमित करना ही इन सखियों के करीब आने और एक-दूसरे के सुख को चाह करने का कारण बनता है। 'छतरियाँ' कहानी नारी के ऐसे रूप को हमारे समक्ष रखती है जो छाते की तरह धूप, वर्षा से परिवार की रक्षा करती हैं किन्तु हमारा समाज कभी भी नारी के भावों को नहीं समझ पाता। नारी को परिवार और नौकरी में से किसी एक का चुनाव करना

पड़ता है। उसी स्थिति का अंकन प्रस्तुत कहानी में हुआ है। 'अपराजेय' कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों का अदम्य साहस के साथ सामना करते अमरनाथ की जिजीविषा को प्रस्तुत करती है। 'पांच मिनट का मौन' कहानी किसी व्यक्ति की मृत्यु पर मौन का ढोंग रचने वालों और आंतरिक संवेदना से शून्य होते समाज के यथार्थ को पेश करती है। 'काफिर' कहानी में धर्म का कट्टरवादी नज़रिया हमारे सामने आता है। धर्म इंसान पर इस कद्र हावी हो चुका है कि इंसान की अपनी कीमत ही कम आंकी जानी शुरू हो गई है। 'पालतू' कहानी हमें उच्च - निम्न स्तर की औरतों पर पुरूष पति का अत्याचार करना, उनकी स्थिति को एक समान धरातल पर लाने जैसा लगता है। पति पत्नी पर अपना अधिकार समझता है। जिस कारण वो घरेलू हिंसा, अपने वर्चस्व को बनाये रखने के लिये करता है। इस कहानी की नायिकाएं पति को पालतू समझकर अपनी जिन्दगी में आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ाती हैं। कहानीकार अपने पात्रों को संघर्ष करने और उसमें से विजयी होकर निकलने को प्रेरित करता है।

25.3 आत्मकथा

आत्मकथा से अभिप्राय साहित्य की उस विधा से है जिसमें लेखक स्वयं अपनी जीवनी लिखता है। अपने जीवन से सम्बन्धित विशेष घटनाओं, प्रेरक प्रसंगों, विचारों को पूरी ईमानदारी से आत्मकथा में व्यक्त करता है। आत्मकथा लिखना कोई आसान कार्य नहीं है। क्योंकि अपने गुण-दोष का सही आकलन करके उसकी अभिव्यक्ति करना प्रायः मुश्किल है।

आत्मकथा : जो कहूँगी सच कहूँगी

यह आत्मकथा कमल कुमार के द्वारा रचित है। प्रस्तुत आत्मकथा का प्रकाशन वर्ष 2017 में, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें पृष्ठ संख्या 211 है। प्रस्तुत आत्मकथा में आत्मकथाकार के शुरू से अब तक की यात्रा का पड़ाव दर पड़ाव चित्रण है।

'कमल कुमारी दास' से कमल कुमार बनने के दौरान की क्या परिस्थितियां बनी, किन घटनाओं व व्यक्तियों के व्यक्तित्व से लेखिका को प्रेरणा मिली, उसे लेखिका ने आत्मकथा में पिरोने का काम किया है। लेखिका की दृष्टि में आत्मकथा इस प्रकार है "यह उपन्यास स्त्रियों द्वारा लिखी जा रही आत्मकथाओं की श्रृंखला में नहीं है। यह आत्म-संस्मरण जैसा हो सकता है जिसमें मेरे रचनाकार का अस्तित्व एक धागे की तरह पुरा है। यह मेरे आज का कल है। मेरे होने की दशा और दिशा है। मेरी स्थितियों, परिस्थितियों की परिणति हैं और स्थिति भी। भीतर के वैक्यूम की क्षतिपूर्ति है। कभी-कभी कुंठाओं से मुक्त भी एक प्रार्थना की तरह है जो अपने को मुक्त करती है।"[3] इस तरह कमल कुमार ने आत्मकथा लिखकर खुद को कुंठाओं से मुक्ति दे दी है। आज उसके बनने की क्या परिस्थितियाँ रही थीं इस आत्मकथा को पढ़कर जाना जा सकता है। प्रस्तुत आत्मकथा में लेखिका ने अपने बचपन, परिवार, शिक्षा, विवाह, लेखन और समकालीन साहित्यकारों से अपने कड़वे - मीठे अनुभवों पर बेबाक ढंग से लिखा है। रचनाकार मानती हैं कि जीवन जीने के लिये उसका लिखते रहना अति आवश्यक है।

2.5. 4. कविता संग्रह

(क) काव्य-संग्रह : बयान

यह काव्य संग्रह कमल कुमार द्वारा रचित है यह सन्मार्ग प्रकाशन द्वारा सन् 1981 में प्रकाशित किया गया। इसकी पृष्ठ संख्या 80 है। कवियत्री ने प्रस्तुत काव्य संग्रह में स्त्री पुरूष संबंधों, आम व्यक्ति के जीवन के प्रति दृष्टिकोण, नेताओं के चरित्र व अकेलेपन से गुजर रहे आधुनिक व्यक्ति का चित्र खींचा है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी नारी के प्रति सोच में जरा-सा भी अंतर देखने को नहीं मिलता। पीढ़ी-दर-पीढ़ी नारी उन्हीं घिसी पिटी मान्यताओं व संस्कारों का बोझ उठाये खड़ी है। पुरूष समाज नारी को देह से ऊपर न देख सका। आधुनिक पति के ऊपर सब

कुछ तो न्यौछावर कर देती है लेकिन दिमाग को वो अपने तक सीमित कर लेती है। यहीं से नारी स्वयं के लिये सोचने-समझने की पहल शुरू करती है। आम व्यक्ति का प्रतीक 'रामदीन' नेताओं व शासक वर्ग के हाथों पिसने को मजबूर है। अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिये अवसरवादी लोगों के जाल में फंसकर अपराधी बन बैठता है और अन्त में मार दिया जाता है। आम आदमी की यही त्रासदी है कि वह हर परिस्थिति में मुँह पर ताला लगाए बैठ जाता है और विरोध करना अपनी मौत को निमंत्रण देना समझता है। आधुनिक युग में जटिल होती जाती जिंदगी में नैराश्य व अंधकार व्यक्ति को निगलने को आतुर है । जीवन की क्षण - भंगुरता, निराशावादी दृष्टिकोण व अकेलेपन से गुजरता व्यक्ति उजाले की छोटी-सी किरण की तलाश में भटकता है इसी अंधकार में कवयित्री प्रेम में बीज छोड़कर जीवन को इन्द्र धनुषीय रंगों से सराबोर कर देती है। अगर मानव स्वार्थ, धोखे व ढोंग का त्याग कर दे तो मानव जाति कुटुम्ब में परिवर्तित हो जायेगी। कवयित्री निराशा से आशा में जीवन की दिशा को बदलने का सामर्थ्य रखती हैं। यही खासियत उनके लेखन को प्रभावशाली बनाती है।

(ख) काव्य संग्रह : सूर्य देता है मंत्र

कमल कुमार कृत 'सूर्य देता है मंत्र' काव्य संग्रह है। यह सरल प्रकाशन द्वारा 2005 में प्रकाशित किया गया। इसकी पृष्ठ संख्या 112 है। कवयित्री ने इसे पांच भागों में विभाजित किया है- फिशपौंड, औरतें और मछलियाँ, बढ़ोगी तुम प्यास सी, गलियारा, यह देवभूमि है और अहम् ब्रह्मस्मि। पहले भाग में बेघर लड़कियों, विस्थापित औरतों, छली जाती हैं औरतों, साधारण व मामूली औरतों की व्यथा को कवयित्री ने आवाज दी है। औरतों व मछलियों की स्थिति एक जैसी है जिन्हें अपनी ही परिधि के भीतर रहना पड़ता है। इसके बाहर जाने पर सजा का विधान है। द्वितीय भाग में प्यार के विभिन्न भावों को कवयित्री ने सामने रखा है। कहीं प्रेम की अनबुझी प्यास है, प्रेम में लीन प्रेमी जन है तो कहीं उसमें अस्वीकृति का भाव भी है। कवयित्री ने प्रेम के

प्रतीक ताजमहल को कसाई घर की संज्ञा दी है। जिसने कई कारीगरों को अपाहिज बना डाला । प्रेम का यह रूप भयानकता लिये है। प्रेम तो छोटी-छोटी खुशियों को सहेजने से जुड़ा है। तीसरे भाग में कवियत्री ने आम जन के चहेते पोस्टकार्ड की हालत को बयान किया है ।

इस भाग में डॉक्टरों के झूठ व लालच की बलि चढ़ते आम जन की हालत और विदेश में बैठे युवक की त्रासदी बयान की है जो अकेलेपन की भट्टी में धू-धू कर जल रहा है। मनुष्य के भीतर आर्द्रता के सूखने और मनुष्य की आज की स्थिति पर कवयित्री ने अपने विचार रखे है। चौथे भाग में देवभूमि हिमाचल का जिक्र है। जहाँ के पर्वत, वृक्ष, झरने, झील व हवा इत्यादि का सजीव रूप में चित्र कवियत्री ने प्रस्तुत किया है। इंसान के बढ़ते लालच ने आज वहाँ की हरियाली को नंगा करके सामूहिक बलात्कार पीड़ित नारी के रूप में रख दिया है। हरियाली से दूर भाग रहा शहरी व्यक्ति ही उसकी पीड़ा को समझता है। पांचवे भाग में प्रस्तुत काव्य-संग्रह का शीर्षक कविता 'सूर्य देता है मंत्र' के माध्यम से बताया गया है कि सूर्य हमें प्रज्ञा, तपस्या, समर्पण व सृजन का मंत्र देता है। सूर्य की रोशनी अंधेरे को चीरते हुये आगे निकलती है। इससे हममें सकारात्मकता आती है। प्रस्तुत भाग में आंतरिक चेतना की गूँज हमें सुनाई देती है। समग्रतः कवयित्री ने त्रस्त औरतों, त्रस्त आम व्यक्ति, हरियाली, पर्यावरण जैसे विषयों पर लेखन कार्य करके हाशिए को केन्द्र में लाने का प्रयास किया है ।

(ग) काव्य संग्रह : साक्षी हैं हम

कमल कुमार कृत 'साक्षी हैं हम' अभिरूचि प्रकाशन से 1999 में प्रकाशित किया गया। इसकी पृष्ठ संख्या 125 है। कवयित्री ने प्रस्तुत काव्य-संग्रह को "साक्षी, हम व आत्म" ने में विभाजित किया है। साक्षी खंड की कविताओं में जिंदगी, प्यार के विभिन्न अर्थ, आम इंसान का प्रतीक रामदीन और कविता के द्वारा जीवन के हर पक्ष को पाठक वर्ग के समक्ष रखा है।

जवानी के समय इंसान मृत्यु को भूलाकर कई भूल कर बैठता है और वही बुढ़ापे में देश-दुनिया को लेकर चिंतित हो उठता है। कवियत्री प्यार को जिंदगी मानकर चलती है। उनका मानना है कि प्यार को सिर्फ एक आदत मान लेना सही नहीं है। आम व्यक्ति का प्रतीक रामदीन बाढ, सूखे व शोषक वर्ग के हाथों रोज मरता है। यही उसकी नियति है। कवयित्री ने समुद्र को विशालता व महानता का ढोंग त्यागकर साधारण तरीके से जीने व अपनी कुंठाओं से मुक्त होने को कहा है। कमल कुमार ने कविता को कई तरह से परिभाषित करते हुये कहा है कि कविता जीवन के हर पक्ष का हमें आईना दिखाती है। यह कवि व कवयित्री के अंतस से निकलकर जीवन को सही दिशा दिखाती है। 'हम' भाग की कविता में औरतें नहीं, मायावी घर, प्रतीक्षालय, उनका भाग्य, बाजार व बेटी से बहू इत्यादि कविताओं के द्वारा नारी की स्थिति व समाज के हर वर्ग द्वारा नारी को प्रताड़ित करने की व्यथा को रेखांकित करता है। जिस घर में ताउम्र नारी अपना सर्वस्व न्यौछावर करती है वहीं उसे शोषित जीवन जीना पड़ता है और बोलने की स्थिति में जान से हाथ धोना पड़ता है। कवयित्री नारी को इसे अपना भाग्य मानकर स्वीकार न करके अपने उज्ज्वल भविष्य के लिये प्रयास करने को प्रेरित किया है। 'आत्म ने' में कवयित्री ने आंतरिक भावों के जरिये समाज के हर वर्ग को न्याय मिलने, अंधेरे से रोशनी की ओर बढ़ने के बिम्ब चित्रित किये है। कवयित्री का मानना है कि कभी तो एक दिन ऐसा आयेगा जब सूरज हर दरवाजे पर दस्तक देगा सभी को न्याय मिलेगा। कवयित्री आवर्तन को जीवन मानते हुये परिवर्तन को प्रकृति का नियम मानकर जीवन में सभी को आगे बढ़ने का संदेश देती है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह कवयित्री के जीवन के हर पक्ष से साक्षी होकर लिखने से सम्बन्धित है।

(घ) काव्य-संग्रह : गवाह

कमल कुमार कृत 'गवाह' काव्य संग्रह 1990 में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली से प्रकाशित किया गया । कुल पृष्ठों की संख्या 132 है। 'गवाह' कमल कुमार ने जिसमें आम

व्यक्ति की दारूण स्थिति, स्त्री के विभिन्न रूपों व कविता के पक्षों पर बात की है। कवयित्री ने इसे तीन खण्डों में विभाजित किया है। कवयित्री ने प्रस्तुत काव्य संग्रह के जरिए शोषित जन की समस्याओं धर्म–राजनीति के कुचक्र में पिसते मानव जाति भेदभाव व प्रतिकूल परिस्थितियों से दो-चार होते मानव की कथा कही गई है। आम-जन अमीर वर्ग के हाथों में सिर्फ कीड़े-मकोड़े के समान है जिसे कभी भी मसला जा सकता है। अपनी इसी स्थिति के कारण ही आम व्यक्ति सिर्फ नकारात्मक सोचना शुरू कर देता है। उसकी हालत तो फल-सब्जियों से भी गई गुजरी है। देश को आजाद हुए इतने वर्ष बीत चुके हैं। किन्तु उसे आजादी का मर्म समझ नहीं आया।

हर तरफ आम जन पीड़ित व त्रस्त हैं और उसका नुमाइंदा रामदीन के जरिए देश के हालात बदलने की बात कही है क्योंकि उसके भीतर का गुस्सा एक दिन लावा बनकर बाहर फूटेगा और शोषक वर्ग का समूल नाश करेगा। द्वितीय खंड में नारी के चरित्र के विविध रूपों का वर्णन है। कहीं नारी प्रेमिका है तो कहीं पत्नी है। प्रेमिका के रूप में नारी प्रेम के स्वरूप को देह से परे देखकर चलती है। पत्नी को सिर्फ घर की शोभा व मुखौटे के आवरण तले जीना पड़ता है। जहां उसका खुद का अस्तित्व शून्य रह जाता है। उसे किसी भी तरह की स्वतंत्रता हासिल नहीं है और न ही अपनी बात कहने का अधिकार है। पुरुष ही उसे विभिन्न विशेषणों से अलंकृत करते हुए अपने पीछे-पीछे चलाता है। पत्नी घर में बकरी और पति शेर बनकर रहता है तभी परिवार की इकाई सुरक्षित रह पाती है। कवयित्री ने अपनी अंतिम कविताओं के माध्यम से नारी जाति में सकारात्मकता लाते हुए अंधेरे से लड़कर जीत की ओर अपने कदमों को निरंतर आगे बढ़ाने की सीख दी है। तृतीय खण्ड में कमल कुमार ने कविता के विभिन्न रूपों को आकार दिया है। उनकी कविता निराशा से आशा की ओर अग्रसर होती है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह में कवयित्री ने अपने रचनाकार तेवर के ज़रिए समाज के यथार्थ को हमारे सामने रखा है। अंधेरी

गुफाओं और अन्याय से त्रस्त जनता में भी ज्वालामुखी फूटेगा। वहां भी रामदीन उस अन्याय की गवाही देगा और शोषक वर्ग की हार को सुनिश्चित बनाएगा।

2.5.5 साहित्य सम्मान :-

कमल कुमार अपने लेखन के कारण कई साहित्य पुरस्कारों से सम्मानित की जा चुकी हैं। साहित्यकार सम्मान, हिन्दी अकादमी - दिल्ली, साहित्य भूषण, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, साधना श्रेष्ठ सम्मान, मध्य प्रदेश, साहित्य श्रेष्ठ सम्मान-बिहार, प्रवासी भारतीय साहित्य और कला सभा, जार्जिया अटलांटा- अमेरिका, द्वारा रचनाकार सम्मान, साहित्य सम्मान, बुद्धिजीवी और संस्कृति समिति (उ0प्र0) अस्मिता, प्रवासी भारतीयों की अमेरिका में साहित्य संस्थान द्वारा 'घर और औरत' श्रृंखला की कविताओं पर सम्मान, साहित्य भारती सम्मान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) मुक्तिबोध राष्ट्रीय सम्मान, साहित्य अकादमी और संस्कृति परिषद (भोपाल, म0प्र0) की ओर सम्मानित की जा चुकी हैं। साहित्य सम्मान की जानकारी लेखिका के ईमेल द्वारा भेजी गई प्राप्त जानकारी से है। कमल कुमार हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने वाली अत्यंत प्रतिभाशाली लेखिका है। कहानी, कविता, उपन्यास व आलोचना के क्षेत्र में किया गया उनका लेखन कार्य उनकी पारंगता को दर्शाता है। लेखिका विकट परिस्थितियों से जूझते हुए जिस प्रकार हार को स्वीकार नहीं करतीं ठीक उसी तरह से उनके पात्र भी विकट से विकट परिस्थितियों में अपनी जिजीविषा को बनाये रखते हैं उनका समुचित साहित्य जीवन के यथार्थ से जुड़कर अपनी सामग्री एकत्रित करता है। कमल कुमार की कहानी लेखन कला पर कमलेश्वर के विचार हैं - "कमल कुमार के पास कलात्मक बिन्दु मौजूद है। आज मनुष्य सम्वेदनाओं के टुकड़े जोड़कर कहानी पैदा कर लेना ही शायद कहानी की सबसे बड़ी कला है। कमल कुमार जानती हैं। कहानी में क्या कहना है, कैसे कहना है, किस गहराई में जाना है। कैसे ऊपर आना है। सत्य और यथार्थ में डुबकियाँ लगाकर कब लौटना है यह सब वह बखूबी जानती है।"[4]

स्त्री विमर्श : कही अनकही

'कही अनकही' कमल कुमार द्वारा स्त्री विमर्श पर रचित पुस्तक है जिसमें उन्होंने लेख व विचारों के माध्यम से अपनी बात रखी है। इसका प्रथम संस्करण जून 2011 में आया और बोधि प्रकाशन, जयपुर के द्वारा इसे प्रकाशित किया गया। इसमें कुल 21 लेख हैं। और इसे दो खण्डों में विभाजित किया गया है। पहला खण्ड 'भ्रम का आकाश और यथार्थ की जमीन' है जिसमें 14 लेख हैं। दूसरा खण्ड 'प्रकृति के समीप स्त्रियाँ' हैं। जिसमें 7 लेख हैं। प्रस्तुत पुस्तक की पृष्ठ संख्या 96 है। इसमें मुख्यतः लेखिका ने औरतों के ऊपर होते शोषण, स्त्रियों के विरुद्ध कानून, पर्दाप्रथा, सामाजिक व पारिवारिक हिंसा नारी की राजनीति में भागीदारी न होना, मीडिया में स्त्री के देह रूप में दिखाना, स्त्रियों के घटते अनुपात, धर्म द्वारा स्त्रियों को दबाकर रखना, औरत की अस्मिता छीनना, व्यक्तित्वहीन नारी बनाना, सत्ताप्राप्त लोगों का स्त्री से खिलवाड़ करना व रसोई में जिंदगी निकालती स्त्रियों पर लेखनी चलाई है। उनकी यह पुस्तक नारी की स्थिति पर विचार करने और सदियों से दबी हुयी नारी को जगृत करने के लिये प्रेरणा स्त्रोत का काम करेगी।

स्त्री संशब्द विवेक और विभ्रम

यह पुस्तक कमल कुमार द्वारा सम्पादित है। पुस्तक को 2006 में अमित प्रकाशन, गाजियाबाद (उ०प्र०) के द्वारा प्रकाशित किया गया है। इनकी कुल पृष्ठ संख्या 314 है। यह पाँच भागों में विभाजित है - स्त्री होना - विवेक और विभ्रम, मेरी दृष्टि में स्त्री, स्त्री वादी साहित्य संशब्द, स्त्रीवादी संशब्द और बाह्य परिदृश्य और स्त्री। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक व लेखिकाओं के निबन्धों का संग्रह हैं जिसमें सभी ने स्त्रियों पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। स्त्री होने से आप क्या सोचते हैं? मेरी दृष्टि में स्त्री क्या है ? इत्यादि प्रश्नों पर विचार किये गए हैं।

कमला नेहरू नारी मुक्ति की पुरोधा शताब्दी समारोह की पुस्तक

यह पुस्तक शताब्दी समारोह के दौरान लिखी गई थी। कमला नेहरू परिवार से स्म्बन्ध रखती थीं। वह एक जागृत स्त्री थीं किन्तु उसे नेहरू के द्वारा पत्नी का अधिकार व सम्मान नहीं दिया गया। उसकी ननदें भी उसके साधारण परिवार से होने के कारण उस पर रोब मारती थीं। वह कई विदेशी आन्दोलनों में हिस्सा ले चुकी थीं। उसके व्यक्तित्व को पूरी तरह से नकार दिया गया। स्त्री मुक्ति की अवधारणा को शुरू से आरम्भ करने वाला नाम कमला नेहरू का है।

असंगठित क्षेत्र में स्त्रियों के अधिकार

यह एक वर्कशाप थी जिसमें कमल कुमार कामकाजी औरतों से बात चीत करती थीं। यह वर्कशाप नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से थी। इसमें जो औरतें, फैक्टरी, घरेलू काम व निर्माण कार्य में लगी हैं उन्हें जागरूक करना था। वर्क प्लेस पर उनके साथ जो भेदभाव किया जाता है उस पर ही उन्हें जागरूक करना इसका उद्देश्य था।

शमशेर का कृतित्व :

दिल्ली का एक प्रोजेक्ट था जिसमें शमशेर पर लम्बा लेख लिखा गया है।

अज्ञेय की काव्य-संवेदना

कमल कुमार की पी0एच0डी अज्ञेय पर किया गया शोध कार्य है। जिसमें अज्ञेय की छायावादोत्तर परिदृश्य की कविता है। शोध प्रबंन्ध लिख देने के बाद इसे पुस्तक रूप में लेकर आया गया। यह अज्ञेय के व्यक्तित्व, कृतित्व, विचार विमर्श व काव्य-दृष्टि पर विचारात्मक पुस्तक है।

नई कविता की परंपरा और भूमिका

यह पुस्तक कमल कुमार की 60 के बाद की कविता पर एम0फिल0 में किया गया लघुशोध प्रबंध है। इसमें 60 के बाद के जितने भी संबंधित कवि थे उनके पास स्वयं जाकर बात चीत करके सामग्री जुटाई गई थी। ये कवि आने वाली नई कविता की परम्परा की भूमिका प्रस्तुत करते हैं। कविता के बारे में क्या सोचते हैं? जो लिख रहे हैं उसके बारे में क्या सोचते हैं और आने वाली कविता के बारे में क्या विचार हैं? उसका वर्णन इस पुस्तक में मिलता है।

विभिन पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख

सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों पर सौ से भी अधिक लेख विविध पत्र-पत्रिकाओं के अलावा नवभारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान, जनसत्ता, साहित्य–अमृत, दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा, इंडिया टुडे, समकालीन साहित्य, ज्ञानोदय, वागर्थ, अक्षरा, साक्षात्कार वसुधा, दस्तावेज, नई धारा, मनस्वी, संबोधन, पुनश्च: हंस, कथादेश, कथाक्रम, व सद्भावना दर्पण इत्यादि में प्रकाशित हो चुके हैं। (ईमेल के द्वारा भेजी गई सामग्री के आधार पर) कमल कुमार द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे लेख समाज के प्रत्येक पक्ष का सूक्ष्म, गहन, सटीक, व पैनी अध्ययन करते हैं। लेखिका अपने लेखों के माध्यम से समाज के नब्ज को पकड़ने का काम करती हैं।

2.5.6 अन्य योगदान

(ईमेल द्वारा प्राप्त जानकारी) कमल कुमार द्वारा विभिन्न देशों में जाकर अपने पत्र पुस्तक किये जा चुके हैं। जो इस प्रकार हैं- कैथेलिक यूनीवर्सिटी (बेलिजयम), सैस्मों, टुरैनो (इटली), बीजिंग (चीन), बेबीलोन (बगदाद), जार्जिया, अटलांटा (अमेरिका) मॉरिशस, इस्लामाबाद, लाहौर (पाकिस्तान), त्रिनिडाड, लंदन बरमिंघम और मैनचेस्टर (यू०के) आदि ।

उनका दूरदर्शन के कार्यक्रमों की चर्चाओं में विशेष भागीदारिता रही है। कमल कुमार दूरदर्शन पर पत्रिका, साहित्यिक कार्यक्रम की बीस - बाईस साल तक कंपेयर (डी0जे0) रहीं। आकाशवाणी और दूरदर्शन के सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों की चर्चाओं में विशेष भागीदारी निभाई है। विभिन्न निर्देशकों द्वारा कमल कुमार व उनकी रचनाओं पर फिल्म बनाया गया। दूरदर्शन के द्वारा कमल कुमार द्वारा रचित 'समय बोध' कहानी पर फिल्म 'उत्तेजना' बनाई गयी। यह फिल्म अशोक बजरानी द्वारा बनाई गई। इसके अलावा प्रसार भारती द्वारा 'जंगल' कहानी पर फिल्म निर्देशित की गयी और उपन्यास पर धारावाहिक व स्क्रिप्ट लेखिका के रूप में कमल कुमार ने काम किया। इनके द्वारा रचित चर्चित उपन्यास 'हैमबरगर' पर रेडियो धारावाहिक आकाशवाणी के लखनऊ और इलाहाबाद के केन्द्रों से प्रसारित हुआ। इसी उपन्यास पर टेलीविजन धारावाहिक के रूप में दर्शकों के सामने प्रस्तुत हुआ। कमल कुमार द्वारा मीरा दीवान की फिल्म के लिये स्क्रिप्ट लेखन का काम भी किया गया।

प्रतिभा सम्पन्न साक्षात्कारकर्ता :

कमल कुमार दूरदर्शन और आकाशवाणी के विशेष कार्यक्रमों के लिये साहित्यकारों और विशिष्ट व्यक्तियों के साक्षात्कार ले चुकी हैं वह अपने अनुभव बताती हैं— "मैने बड़े-बड़े लेखकों के साक्षात्कार लिये। अज्ञेय, भीष्म साहनी व निर्मल वर्मा इत्यादि। निर्मल वर्मा का साक्षात्कार लेना आसान नहीं होता उसके लिये मैने दस दिन समय माँगा था। फिर रामदरश मिश्र का साक्षात्कार लेना था तब मैं लंदन में थी। लेखक का कहना था जब कमल कुमार आयेंगी तब ही मैं साक्षात्कार दूँगा। (साक्षात्कार के आधार पर)

कमल कुमार ने निर्मल वर्मा का दूरदर्शन और आकाशवाणी पर, अज्ञेय का दूरदर्शन पर, भीष्म साहनी का दूरदर्शन और आकाशवाणी पर, जैनेन्द्र कुमार का दूरदर्शन पर, महाश्वेता देवी

का पत्रिका के लिये इसके अलावा समकालीन लगभग सभी रचनाकारों रामदरश मिश्र, राजेन्द्र यादव, नामवर सिंह, कमलेश्वर, नित्यानन्द तिवारी, महीप सिंह, कुसुम अंसल, चन्द्रकान्ता, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, इन्दुजैन इत्यादि लेखिकाओं का दूरदर्शन पर आकाशवाणी पत्र-पत्रिकाओं के लिये साक्षात्कार और चर्चाओं की कम्पेयर।

हिन्दी के प्रति समर्पण

कमल कुमार हिन्दी भाषा को नई ऊँचाईयों पर ले जाने का माद्या रखती हैं। वह हिन्दी के प्रति समर्पित रही हैं। उनका हिन्दी भाषा के प्रति प्यार ही था जिसने कि जीजस खण्ड मेरी कॉलेज में हिन्दी का झण्डा सदैव ऊँचाईयों पर रखा लेखिका ने हिन्दी-विभाग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कमल कुमार के शब्दों में - "हिन्दी विभाग के विकास के लिये सर्वप्रथम हिन्दी में ऑनर्स का पाठ्यक्रम मेरे प्रयत्नों से शुरु हुआ जिससे विभाग में पांच नई नियुक्तियाँ भी हुई। उसके बाद सर्वप्रथम कॉलेज में एम०ए० हिन्दी भी मेरे ही कठिन प्रयत्नों से ही संभव हो सका। विभाग में प्राध्यापिकाओं की संख्या सोलह तक पहुँची। कॉलेज का सबसे बड़ा विभाग। यह बहुत बड़ी सफलता थी।" कमल कुमार ने कॉलेज मैगजीन की सम्पादिका के रूप में मैगजीन को द्विभाषीय पत्रिका के रूप में हिन्दी को प्राथमिकता देते हुये सामने लाईं। " हिन्दी अकादमी का सम्मान और पारितोषिक, मेरे द्वारा सम्पादित पत्रिका को मिला"[5] कमल कुमार सहृदय व्यक्तित्व, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न लेखिका, उत्कृष्ट साक्षात्कार कर्ता, योग्य कम्पेयर व हिन्दी भाषा को समर्पित भारतीय नागरिक हैं। कमल कुमार अपने जीवन में निभाई जाने वाली प्रत्येक भूमिका के साथ न्याय करती हैं। रामदरश मिश्र के शब्दों में "मुझे अपने जिन छात्रों का गुरू होने का गौरव अनुभव होता है उनमें डॉ० कमल कुमार का नाम बहुत गर्व से लेना चाहूँगा।''[6] कमल कुमार का व्यक्तित्व उनके साहित्य की तरह ही विशिष्ट और प्रभावशाली रहा है। उनका साहित्य ही उनके व्यक्तित्व के अलग-अलग कोणों को हमारे सामने लाता है।

संदर्भ सूची

1. सम्पादक, दिनेश द्विवेदी, पुनश्च मंथन पब्लिकेशन, मध्य प्रदेश, जनवरी - अप्रैल, 2006, अंक - 17, पृ0 27।
2. कमल कुमार, जो कहूँगी सच कहूँगी, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ० 12।
3. कमल कुमार, जो कहूँगी सच कहूँगी, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ0 5।
4. सम्पादक, दिनेश द्विवेदी, पुनश्च, कमल कुमार की कहानियाँ, कमलेश्वर (मध्य प्रदेश, मंथन पब्लिकेशन, जनवरी - अप्रैल, 2006, अंक - 17, पृ0 108 ।
5. सम्पादक, दिनेश द्विवेदी, पुनश्च, मंथन पब्लिकेशन, मध्य प्रदेश, जनवरी- अप्रैल, 2006, अंक - 17, पृ0 14 |
6. सम्पादक, दिनेश द्विवेदी, पुनश्च मंथन पब्लिकेशन, मध्य प्रदेश, जनवरी - अप्रैल, 2006, अंक - 17, पृ0 15|
7. सम्पादक, दिनेश द्विवेदी, पुनश्च, राग और ऊर्जा की लय, रामदरश मिश्र, मंथन पब्लिकेशन, मध्य प्रदेश, जनवरी - अप्रैल, 2006, अंक – 17, पृ० 125 |